श्री शत्रुंजय - मुक्ति सम्यग्ज्ञान अभ्यासक्रम

तृतीय वर्ष - अभ्यास - ४

सप्टेंबर - २०१९

गुणांक - १००

प्रश्न - पत्र

सूचना : १. नाम और एनरोलमेंट नंबर बिना का पेपर रद्द किया जायेगा । २. लाल स्याही के पेन का उपयोग न करें । ३. समझ में न आये ऐसे अक्षरों वाले जवाब पत्र जांचे नहीं जायेंगे । ४. जवाब पत्र में ही योग्य खाने में जवाब लिखना है, साथ में दूसरा पेपर जोडना नहीं है, जोडने पर तीन मार्क्स काट लिये जायेंगे । ५. जवाब पत्र हर महिने की ता. २५ तक भेजना जरुरी है, आगे-पीछे आए पेपर जांचे नही जायेंगे । ६. सभी जवाब अभ्यासक्रम के आधार पर ही लिखना है । ७. जिस महिने का प्रश्न पत्र है, उसके बाद के महिने की २५ ता. को आपके मार्क्स तथा सही उत्तर इन्टरनेट पर दे दिये जायेंगें, उसके बाद आए हुये उत्तर पत्र स्वीकृत नहीं होंगे तथा फोन पर जवाब नहीं दिया जायेगा । ८. उत्तर पत्र में अभ्यासक्रम का नंबर लिखना जरुरी है ।

प्रश्न नं. १ रिक्त स्थान की पूर्ति करो - २०

१. जो ..... का लोप करता है वह मिथ्यात्वी है ।
२. जो. ..... का प्रतिनिधित्व करने में समर्थ है ।
३. अनेक आत्माओं ने ..... के मार्ग को स्वीकार कर शिवगति को प्राप्त किया है ।
४. जिनके नाम का उच्चारण ..... के निवेशन में आदरपूर्वक किया जाता है ।
५. जिसका चैतन्य निरंतर पान करता हुआ समाधि में लीन बनता है वह अवस्था ..... कहलाती है ।
६. गुरु चरणों में वंदन कर अपने ..... की बारम्बार क्षमा याचना की ।
७. ..... का यही एक राजमार्ग है ।
८. कर्म क्षय की क्रिया में यह ..... की क्रिया सहायक बनती है ।
९. ध्यानरुपी ..... से परमशुद्धि की प्राप्ति होती है ।
१०. ..... परमतत्व की विशिष्ट संज्ञा प्रणवबीज, एक अक्षररुप यह परम तत्व का वाचक है ।
११. ऐसे प्रसंग से वैराग्य पायी हुई ..... सुंदर तरीके से श्राविका योग्य जीवन जीने लगी ।
१२. परमात्मा की ..... में निमग्न जिन प्रतिमा को निरखते रहे ।
१३. ..... सुलभ होने पर भी उनकी ओर रुचि नहीं होती, वैसे वैसे जीव उत्तम श्रेष्ठ तत्व को प्राप्त करता है ।
१४. मोहनीय कर्म के बहुत सारे ..... की उदिरणा करता है ।
१५. परम्परा से आचरण हुआ हो ऐसे आलोचना दे वो ..... कहलाता है ।
१६. आत्मा की अनंतशक्ति का परिचय देने वाला ..... भी है ।
१७. जिन शासन ..... और व्यवहार युक्त है ।
१८. ..... विशेष रुचि रखने वाले जीवों के लिये उन्होंने विस्तृत रचना की है ।
१९. वैसे ही आत्मा .....प्राप्त करती है ।
२०. .....छद्मस्थ को छः समुद्घात होते हैं ।

प्रश्न नं. २ एक शब्द में जवाब लिखो - १५

१. आलोचना का किस तप में समावेश किया गया है ?
२. श्वेतांबर और दिगंबर दोनों संप्रदाय में किस सूत्र का महत्वपूर्ण स्थान है ।
३. कौनसी दशा प्राप्त नहीं होती तब तक निश्चय को मन में रखकर व्यवहार में साधुयोग्य सब क्रियायें करनी चाहिये ।
४. कौनसा स्तव उसकी मंगलमय रचना के कारण उपसर्ग निवारक माना जाता है ?
५. कौनसे समुद्घात के व्दारा आयुष्य कर्म के बहुत सारे पुद्गलों की उदीरणा करके भोगकर नाश करते हैं ?
६. पू. हरिभद्रसूरि की धर्म जननी माता कौन थी ?
७. कषायों के मंद उदय से जो परम आल्हाद की प्राप्ति होती है उसे कौनसा गुणस्थान कहते हैं ?
८. प्रथम रति प्रकरण की रचना किसने की है ?
९. आलोचना लेने वाले को सम्यक् प्रकार से पापशुद्धि कराने वाले क्या कहलाते है ?
१०. केवली समुद्घात करते समय केवली भगवंत कितने कर्मो की स्थिति समान करते हैं ?
११. बृहद्शांति स्तोत्र की रचना किसने की है ?
१२. साधक किस गुणस्थान में निरालंब ध्यान प्राप्त करता है ?
१३. जो कूटशास्त्र का सेवन करे उसके क्या बढते हैं ?
१४. आलोचना लेने से आत्मा क्या प्राप्त करती है ?
१५. भारतीय दार्शनिक परंपरा का अध्ययन करने वालो को छःओ दर्शन के एक साथ निरुपण के लिये किस ग्रंथ का अध्ययन करना चाहिये ?

प्रश्न नं. ३ नीचे दिये गये शब्दों के अर्थ लिखो - १०

१. धृति २) माहरवं ३) वेउव्विय ४) विज्ञाय ५) यावत ६) आणा ७) विधाय ८) गत्वा ९) भास्कराः १०) सन्नीणं ११) निज्जरेइ
१२. दुर्ग १३) अेतद् १४) अज्जु १५) निज्जव १६) समेत्य १७) दुरकक्करणं १८) शृणुत १९) रिपु २०) इथ्थीवेअं

प्रश्न नं. ४ जोडियाँ लगाओ (सिर्फ 'B' के नंबर लिखो) - १०

A	B	A	B
१) राजवार्तिक	१) रुपस्थ	६) उमास्वाति	६) मलिनता
२) सद्ध्यान	२) बुद्धि	७) अर्हदप्रभाव	७) सनिष्ठ
३) आलोचना	३) चित्रकुट	८) अप्रत्याख्यानादि कषाय	८) आत्मशुद्धि
४) सरोवर	४) तत्वार्थ सूत्र	९) हरिभद्रसूरि	९) कौभाषणी
५) धर्मध्यान	५) हंस	१०) सहस्त्रयोधी	१०) अनिवृति गुणस्थान

प्रश्न नं. ५ निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संख्या में लिखो - १०

१. बृहद शांति स्तोत्र में सरस्वती के कितने स्वरुप कहे गये हैं ?
२. आलोचनाचार्य कितने गुणों से युक्त होते हैं ?
३. जितारी राजा कितने वर्ष पूर्व राज्य करते थे ?
४. सद्ध्यान के कितने प्रकार हैं ?
५. केवली भगवंत कितने समय का केवली समुद्घात करते हैं ?
६. तत्वार्थ सूत्र के प्रथम चार अध्याय में सूत्र संख्या कितनी ?
७. लक्ष्मणा साध्वी ने कितने वर्ष तक तीव्र तपश्चर्या की ?
८. योगबिंदु ग्रंथ में कितनी गाथायें है ?
९. सूक्ष्म संपराय गुणस्थानक में मोहनीय कर्म की कितनी प्रकृति शांत अथवा क्षीण होती हैं ?
१०. व्यंतर जीवों को कितने समुद्घात होते हैं ?

प्रश्न नं. ६ नीचे के वाक्य सही (✓) हैं या गलत (×) बताओ - १०

१. जीवन में ऐसे दोषो का सेवन हो इसके लिये सावधान बनना है ?
२. बृहद्शांति सूत्र जिनबिंब की प्रतिष्ठा तथा स्नात्र के अंत में बोला जाता है ।
३. रुपातीत धर्मध्यान में आंशिक रुप से शुक्लध्यान है ।
४. पू. उमास्वातिजी महाराज के घोषनंदी आचार्य वाचनाचार्य थे ।
५. आलोचना लेने से पूर्व बांधे कर्म की निर्जरा होती है ।
६. केवली समुद्घात से नाम, गोत्र, वेदनीय कर्म का अनपवर्तना करण के द्वारा बहुत विनाश होता है ।
७. तत्वार्थ सूत्र के आठवें अध्याय में सत्तावीस सूत्र हैं ।
८. आलोचना लेने से तीर्थंकर परमात्मा की आज्ञा का पालन होता है ।
९. पू. हरिभद्रसूरि हंस-परमहंस की अकाल मृत्यु से मोहांध बने ।
१०. मैत्री - प्रमोद आदि शुक्लध्यान की भावनाये है ।

प्रश्न नं. ७ नीचे के वाक्य किस पृष्ठ पर है वह पृष्ठ नंबर लिखो - १०

१. जिनके नाम का आदर पूर्वक उच्चारण किया जाता है ।
२. ध्यानरुपी भावतीर्थ से परमशुद्धि की प्राप्ति होती है ।
३. कभी काया से पाप होते हैं, कभी सावद्य वचन बोलने में आ जाते है ।
४. जिन की आशातना कैसे सहन हो ? उन्होंनें प्रतिमा के कंठ पर तीन रेखाये बनायी ।
५. ऐसी सात समुद्घात की क्रिया केवल संज्ञी मनुष्य ही कर सकता है ।
६. दूसरे दिन घर का भोजन भाया नहीं अतः उसने घर के भोजन का त्याग किया ।
७. संपराय का अर्थ है कषाय, जहाँ सूक्ष्म कषाय है उसे सूक्ष्म संपराय कहते है ।
८. जिनशासन के त्रिकाल सत्य सिद्धान्तो का ये खजाना है ।
९. ज्ञान आदि पंचविध आचारवान होते हैं ।
१०. मेरे जैसा समस्त जंबुद्वीप में कोई भी नहीं है ।

प्रश्न नं. ८ अपनी भाषा में समझाओ - १५

१. समुद्घात याने क्या ? कर्मक्षय में यह क्रिया कैसे सहायक बनती है ? २) व्यवहारी आलोचनाचार्य समझाइये ।
३. पू. हरिभद्रसूरिजी के योग से जुडे ग्रंथ और उनका वर्णन ४) अप्रमत्त गुणस्थान में छः आवश्यक आदि की आवश्यकता क्यों नहीं ।
५. शांति की उद्घोषणा और उसका अनुकरण ।

उत्तर पत्र नीचे लिखे पते पर भेजिए :
शत्रुंजय अेकेडमी श्री पद्मप्रभस्वामी जैन मंदिर, स्टेशन रोड, चालिसगाँव - ४२४१०१ जिल्हा : जलगांव,
मो. ९०२८२४२४८४. सही परिणाम और सही जवाब के लिये वेब साईट www.shatrunjayacademy.com